REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

चमोली जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाएँ

डॉ. विजय बहुगुणा[1] , गजराज नेगी[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी. जी.) कॉलेज, देहरादून (उत्तराखंड).
[2]शोध छात्र, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी. जी.) कॉलेज, देहरादून (उत्तराखंड).

सारांश–

किसी सेवा केन्द्र से संलग्न चारों ओर का वह क्षेत्र जो अपनी आवश्यकताओं एवं सेवा सुलभता के लिए केन्द्र पर निर्भर करता हैं। अभिवृद्धि केन्द्र कहलाता हैं। इसके अर्न्तगत् केन्द्र की भी संलग्न क्षेत्र से परस्पर निर्भरता होती हैं। अर्थात् ये सेवाओं व वस्तुओं के विनिमय की व्यवस्था के द्योतक हैं। जैसे– खाद्य, शिक्षा, संचार इत्यादि। जिला चमोली उत्तराखण्ड राज्य के महान एवं मध्य हिमालय क्षेत्र का पर्वतीय भू–भाग हैं। इसका अधिकांश विस्तार मध्य हिमालय क्षेत्र में हैं।

प्रस्तुत अध्ययन को जिले के 9 अभिवृद्धि केन्द्रो तथा नगरीय केन्द्रों के माध्यम से तुलनात्मक दृष्टि से किया गया हैं। इसके माध्यम से समस्त क्षेत्र की आधारभूत सुविधाओं पर प्रकाश डाला गया हैं।

किसी भी क्षेत्र के अभिवृध्दि केन्द्रों की आधारभूत सुविधाओं के आधार पर क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं व्यवसायिक व्यवस्थाओं का आंकलन किया जाता हैं। इन सुविधाओं की पर्याप्तता तथा अभाव के आधार पर क्षेत्र नियोजन की नीतियां प्रस्तुत की जाती हैं।

शोध अध्ययन का उद्धेश्य इन मूलभूत कार्यों की समीक्षा तथा इस सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना हैं

प्रस्तावना–

अभिवृद्धि केन्द्र समीपस्थ संलग्न क्षेत्र का मूलभूत सुविधाओं एवं सेवाओं का केन्द्र हैं। वास्तव में कोई भी अभिवृद्धि केन्द्र समीपस्थ क्षेत्रों के आकर्षण का वह मूल होता हैं, जो निकटवर्ती क्षेत्रो की दैनिक आवश्यकताओं, व्यापार, वाणिज्य, सेवा, स्वास्थ्य व परिवहन आदि की पूर्ति करता है। यह केन्द्र एक सजग एवं स्पूर्त पड़ोसी की भूमिका निभाता हैं। वास्तविक रूप से यह ग्रामीण बस्तियों का सेवा क्षेत्र हैं। जो नियत्रित रूप से संलग्न क्षेत्र के लिए सेवा प्रदाता की भूमिका में हैं। केन्द्र के रूप में कच्चा माल प्राप्त करना पुनः उसे परिष्कृत कर कोटि उन्नयन करना तथा उसका वितरण करना अभिवृद्धि केन्द्र की आधारभूत विशेषता हैं।

अभिवृद्धि केन्द्र का आकार समीपवर्ती क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर करता हैं। यानी आकार की दृष्टि से फैले हुए क्षेत्र का अभिवृध्दि केन्द्र सेवा एवं वस्तुओं की उपलब्धता की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध होता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अर्न्तगत् जिला चमोली के अभिवृध्दि केन्द्रों की मूलभूत सुविधाओं का अध्ययन किया गया हैं। इसके माध्यम से सम्पूर्ण केन्द्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सुविधाओं एवं आवश्यकताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हैं।

जिला चमोली का स्थिति मानचित्र

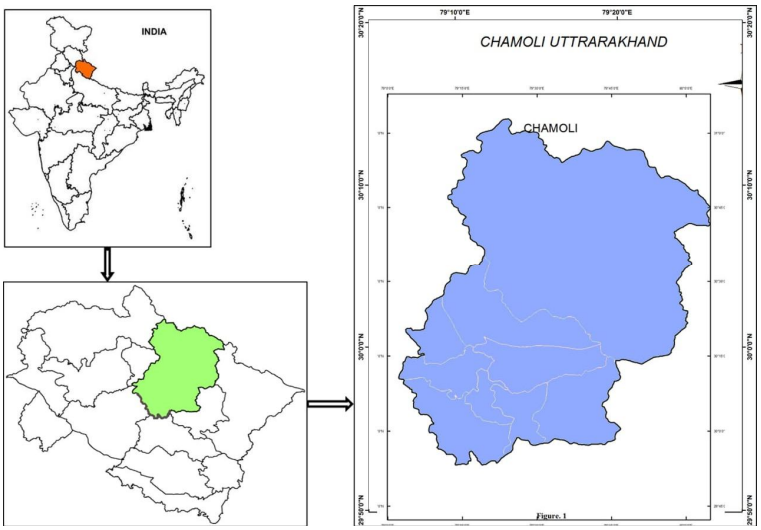

अध्ययन की समस्या एवं उद्धेश्य–

1– अभिवृद्धि केन्द्र के विकास तथा मूलभूत सुविधाओं के मध्य सम्बन्धों तथा एक दूसरे पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2– अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास के सन्दर्भ में आधारभूत सुविधाओं के वितरण एवं विकास को प्रभावी कारक बताया गया हैं।

साहित्यावलोकन

आर. एस. पंवार (1988) ने समन्वित क्षेत्रीय विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका पर 'इन्टीग्रेटेड एरिया डेवलपमेन्ट' विषय पर कार्य किया।

सब्यसॉची कार ने 2007 में **'Inclusive Growth in Hilly Regions Priorities for the Uttarakhand Economy'** में अभिवृध्दि केन्द्रों के महत्व को दर्शाया हैं।

एम. जे. मोजले द्वारा सन् 2013 में पुस्तक **Growth Centres in Spatial** च्संददपदह में अभिवृध्दि केन्द्रो तथा नियोजन की प्रासंगिकता को दर्शाया हैं।

अनुराधा सहाय, वी. पी. एन तथा ऊषा वर्मा के अधिवास भूगोल का परिचय (2017) शोध अध्ययन में विशेष महत्व रखता हैं।

सांख्यिकी पत्रिका (2015–2018) के तथ्यों का भी शोध अध्ययन में उपयोग किया गया हैं।

परिकल्पनाएँ–

1– क्षेत्र विशेष का विकास एवं विस्तार आधारभूत सुविधाओं में वृध्दि से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ हैं।
अर्थात् अभिवृध्दि केन्द्र एवं आधारभूत सुविधाओं में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता हैं।
2– आधारभूत सुविधाओं में बढ़ोतरी से अभिवृध्दि केन्द्रों का व्यापक विकास होता हैं।

शोध रूपरेखा–

शोध विधितंत्र– प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र जनपद चमोली के अभिवृध्दि केन्द्रों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के वितरण को तुलनात्मक रूप में दर्शाया गया हैं। अध्ययन के अंर्तगत पूर्ण रूप से द्वितीयक आँकड़ो का प्रयोग किया जाता हैं।

जनका संकलन जनगणना पुस्तिका, जिला सांख्यिकीय पत्रिका तथा अन्य पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से किया गया हैं। अध्ययन को रूचिकर एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए भिन्न तालिकाओं, आलेखों का प्रयोग किया गया हैं।

जनपद चमोली के अभिवृद्धि केन्द्रों में निम्न आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं–

शैक्षणिक सुविधाएं – किसी भी क्षेत्र का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास उस क्षेत्र की शिक्षा के स्तर से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता हैं। अर्थात् समाज के सर्वागींण विकास का मूल समाज के ज्ञान स्तर पर आधारित हैं। संसाधनों के उपभोग का कुशलता के साथ प्रबन्धन समाज के शैक्षणिक – वैचारिक स्वरूप से निर्धारित् होता हैं।

शिक्षा प्रगतिशील समाज के नींव के पत्थर के रूप में स्थापित एक महत्वपूर्ण घटक है। समाज का शिक्षित स्वरूप समाज की अन्य विकृतियो को कम करने का एक महत्वपूर्ण उपाय हैं। शिक्षा मनुष्य के जीवन में अमूल परिवर्तन लाने में एक महत्वपूर्ण कारण है, व्यक्ति विकास एवं सामाजिक प्रवाह में शिक्षा का योगदान इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि समाज के सभी क्षेत्रो (सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक) की परिपक्वता का आधार एक सम्पूर्ण शिक्षित समाज है।

तालिका संख्या–01
(शैक्षणिक सुविधाओं का केन्द्रों के अनुसार वितरण)

क्रम संख्या	केन्द्र के नाम	बस्तियों की संख्या	जूनियर बेसिक स्कूल	सीनियर बेसिक स्कूल	हायर सेकेण्ड्री स्कूल	महाविद्यालय
1	जोशीमठ	95	97	25	21	0
2	कर्णप्रयाग	213	146	33	35	0
3	दशोली	117	112	30	25	0
4	घाट	97	106	20	21	01
5	नारयणबगड़	153	101	28	30	0
6	गैरसैण	214	159	54	38	0
7	थराली	88	80	25	17	0
8	देवाल	74	84	26	18	0
9	पोखरी	131	122	29	29	0
	योग ग्रामीण	1182	1007	270	234	1
	नगरीय	40	62	33	26	3
	योग जनपद	1222	1069	303	260	4

जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 2017 एंव 2018

ग्रफ संख्या–01
(शैक्षणिक सुविधाओं का केन्द्रों के अनुसार वितरण)

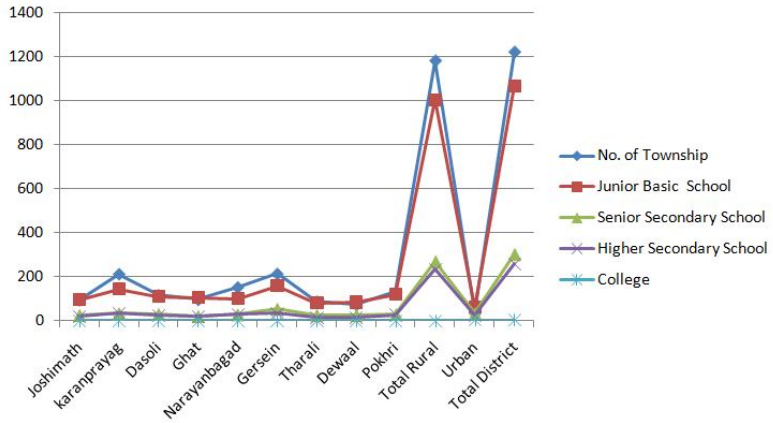

तालिका संख्या–01 के निष्कर्षो के आधार पर यह ज्ञात तथ्य हैं कि सम्पूर्ण जनपद में 1069 जूनियर बेसिक स्कूल, 303 सीनियर बेसिक स्कूल, 260 हायर सेकेण्ड्री स्कूल तथा कुल 04 महाविद्यालय हैं। वितरण की दृष्टि से पर्याप्त असमानता हैं। कुछ क्षेत्र में संस्थानों की बहुल्यता हैं तथा

कुछ में कमी। विशेषकर नगरीय–गामीण विभेद स्पष्ट हैं। उच्चशिक्षण संस्थानों की कमी स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। जो ग्रामीण क्षेत्रों से नगर की ओर पलायन का मुख्य कारण हैं।

स्वास्थ्य सुविधाएं–

किसी भी समाज का मानव संसाधन व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता हैं। एक स्वस्थ समाज समृद्धि, खुशहाली , विकास एवं आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं। स्वस्थ समाज की कार्यशीलता एवं गति अस्वस्थ समाज की तुलना में सदैव अधिक रहती हैं। विकास कार्यों में स्वास्थ्य सेवाओं को महत्वपूर्ण घटक माना गया हैं।

एक स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क की ऊर्जा हैं एवं एक स्वस्थ मस्तिष्क समाज में कार्यकुशल मानव संसाधन के रूप में होता हैं। अतः एच डी आई. के मापदण्ड़ में भी स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण माना गया हैं। इन तथ्यों से यह स्पष्ट है कि स्वास्थ्य सुविधाएं क्षेत्र विशेष के विकास को प्रभावी रूप में प्रभावित करती हैं।

तालिका संख्या–02 (अभिवृद्धि केन्द्र में स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण)
जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 2017 एंव 2018

क्रम संख्या	केन्द्र का नाम	बस्तियों की संख्या	एलोपैथिक चिकित्सालय संख्या	सामुदायिक स्वास्थ्य संख्या	प्राथमिक स्वास्थ्य संख्या	परिवार एवं मातृशिशु कल्याण संख्या	परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र	आयुर्वेदिक चिकित्साल	यूनानी	होम्योपैथिक
1	जोषीमठ	95	6	0	1	0	16	07		1
2	कर्णप्रयाग	213	4	0	3	0	18	08		0
3	दषोली	117	1	0	3	0	15	05		1
4	घाट	97	3	1	1	2	10	07		1
5	नारयणबगड़	153	0	0	2	2	11	08		0
6	गैरसैण	214	2	0	2	0	17	08		0
7	थराली	88	3	1	1	2	08	02		0
8	छेवाल	74	2	0	1	0	07	05		0
9	पोखरी	131	1	0	1	0	11	06		0
	योग ग्रामीण	1182	22	2	15	6	113	56		3
	नगरीय	40	05	4	1	9	0	6		6
	योग जनपद	1222	27	6	16	15	113	62		9

ग्रफ संख्या–02
(अभिवृद्धि केन्द्र में स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण)

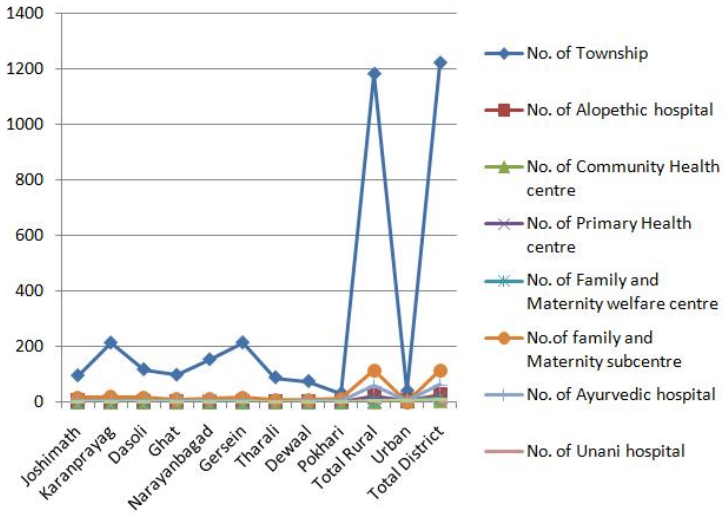

अध्ययन क्षेत्र जनपद चमोली में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव हैं। सम्पूर्ण जनपद में 06 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 27 एलोपैथिक चिकित्सालय, 16 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 15 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र,113 उपकेन्द्र, 62 आर्युवेदिक एवं 09 होम्योपेथिक चिकित्सालय हैं। जो सम्पूर्ण क्षेत्र की दृष्टि से अपर्याप्त् हैं।

स्वास्थ्य सुविधाएं वर्तमान में इस क्षेत्र में एक ज्वलन्त समस्या बन चुकी हैं। विकेन्द्रीकृत विकास अवधारणा को सकार रूप देने के लिए नये एवं अत्याधुनिक उपकरणों से सहज अस्पतालों, डॉक्टरों की संख्या में वृद्धि करना क्षेत्र के तात्कालिक विकास के लिए एक आवश्यक घटक हैं।

यातायात एवं संचार सेवाएं– अभिगम्यता किसी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। जिस प्रकार शरीर में रक्त संचार में धमनियाँ एक महत्वपूर्ण कारक हैं, उसी प्रकार समाज के सम्पूर्ण विकास में प्रत्येक स्थान तक पहुँचना भी एक आवश्यक कारक हैं। यातायात समाज के अर्न्तसम्बन्धों का मिलन बिन्दु का नेटवर्क हैं।

ओवन के शब्दों में विकास गति एवं दर इस बात पर निर्भर हैं कि परिवहन प्रणाली कितनी विश्वसनीय, सक्षम एवं द्रुतगामी हैं। हन्टर के अनुसार परिवहन एवं आर्थिक विकास में कार्य करण सम्बन्ध होता हैं।

तालिका संख्या–03
(अभिवृद्धि केन्द्र में यातायात एवं संचार सेवाएं)

केन्द्र का नाम	डाकघर	पी. सी. ओ.	टेलीफोन	रेलवे स्टेषन	बस,टैक्सी,टैम्पो स्टॉप,स्टेषन
जोषीमठ	36	3	39	0	15
कर्णप्रयाग	44	4	110	0	51
दषोली	23	3	75	0	34
घाट	27	4	46	0	10
नारयणबगड़	20	3	45	0	23
गैरसैण	28	3	34	0	46
थराली	24	3	89	0	17
छेवाल	20	3	10	0	12
पोखरी	25	3	0	0	18
योग ग्रामीण	247	29	448	0	226
नगरीय	14	20	1601	0	13
योग जनपद	261	49	2049	0	239

जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 2017 एंव 2018

ग्रफ संख्या–03
(अभिवृद्धि केन्द्र में यातायात एवं संचार सेवाएं)

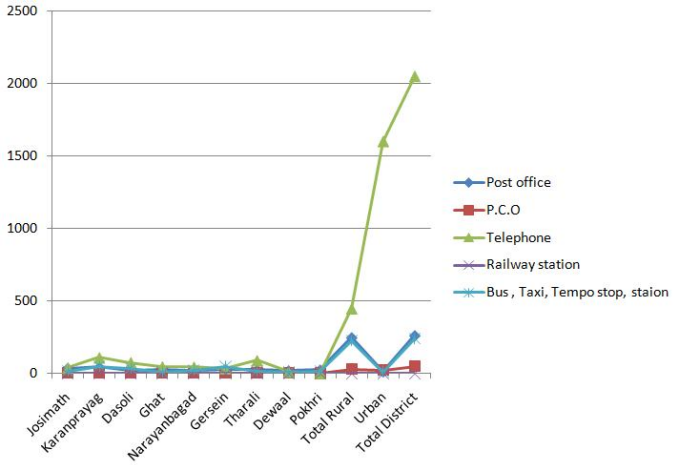

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र का अधिकांश क्षेत्र मध्य हिमालय के अर्न्तगत आता हैं। अतः सड़क द्वारा परिवहन एक महत्वपूर्ण विशेषता हैं। रेलमार्गो का पूर्ण अभाव शोध क्षेत्र के अर्न्तगत पाया जाता हैं। सामरिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र चीन सीमा से लगा हुआ हैं। अतः यहाँ यातायात साधनों का आधुनिक तकनीक से निर्माण कराये जाने को प्राथमिकता दी जानी चाहियैं सम्पूर्ण क्षेत्र में 239 बस स्टॉप है। जो कि कुल 1222 बस्तियों के सन्दर्भ में सन्तोषजनक हैं। सरकार द्वारा भी निरन्तर नये रोड़ नेटवर्को का निर्माण कराया जा रहा हैं।

संदेशो या ध्वनि के माध्यम से व्यक्ति के विचारों एवं भाव का सम्प्रेषण ही संचार कहलाता हैं। अध्ययन क्षेत्र में संचार के मुख्य साधन, डाकघर, पी.सी.ओ, मोबाइल नेटवर्क एवं टेलीफोन हैं।

अध्ययन क्षेत्र के अर्न्तगत कुल 261 डाकघर, 49 पी.सी.ओ तथा 2049 टेलीफोन हैं। इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए यह तथ्य स्पष्ट हैं कि यहाँ संचार साधनो में वृध्दि की आवश्यकता हैं

निष्कर्ष एवं परिणाम

अध्ययन क्षेत्र में अभिवृद्धि केन्द्रो मे उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के शोध अध्ययन के आधार पर यह तथ्य स्पष्ट हैं कि सम्पूर्ण क्षेत्र में सुविधाओं का वितरण भौगोलिक दृष्टि से असमान हैं। नगर क्षेत्रों में सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

9 अभिवृद्धि केन्द्रों के अर्न्तगत शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में भी पर्याप्त अन्तर दिखाई देता हैं। सम्पूर्ण जिले में मात्र 04 महाविद्यालय हैं। जिसमें भी 03 नगरीय क्षेत्रों में हैं।

स्वास्थ्य सुविधाओं का भी सम्पूर्ण जनपद में प्रबल अभाव हैं। 1222 बस्तियों में मात्र 27 एलोपैथिक अस्पताल हैं।

संचार एवं यातायात के दृष्टिकोण से क्षेत्र पिछड़ा हुआ हैं, क्योंकि सम्पूर्ण क्षेत्र पर्वतीय भौगोलिक भू–भाग में आता हैं अतः क्षेत्र के विकास के लिए पर्यावरण सम्बद्ध विकास के मॉडल की आवश्यकता हैं। संरचनात्मक विकास के अर्न्तगत रोड़ नेटवर्क को सशक्त किया जाना चाहिए। वर्तमान में इस क्षेत्र में काफी कार्य किया गया हैं किन्तु उसे अधिक पर्यावरण हितैषी एवं सुरक्षा मानकों के आधार पर किये जाने की आवश्यकता हैं।

सुझाव

अध्ययन क्षेत्र के शोध निष्कर्ष से यह स्पष्ट है कि सभी अभिवृद्धि केन्द्रों में जनसंख्या के अनुपात में विकास कार्यों को किया जाना चाहिए, समावेशी विकास स्तर पर इस क्षेत्र का सर्वांगींण विकास सुनिश्चित हैं जो क्षेत्र से बढ़ रहे पलायन समस्या पर भी रोक लगाने में कारगर साबित होगा।

सन्दर्भ सूची

Mishra R.P .,(1974); 'Integrated Rural development in India'.
Panwar R.S. (1988). 'Importance of Service Centres in Integrated Area Development ;in Integrated Area Development' .
Bansal,S.C.(2004) 'Urban geography' .
A.Geeta Reddy(2011): 'Urban Growth theories and Settlement System in India.'
Moseley M.J (2013) ' Growth Centres in Spatial Planning'.
Fulong W.U. (2015) Planing for Growth : ; 'Urban and Regional Planing in China.'
Ashok kumar(2016): ' Urban and Regional Planning Education.'
Usha verma ,Anuradha Sahay ,V.P.N.Sinha (2017): Introduction to settlement Geography.'

डॉ. विजय बहुगुणा
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी. जी.) कॉलेज, देहरादून (उत्तराखंड).

गजराज नेगी
शोध छात्र, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी. जी.) कॉलेज, देहरादून (उत्तराखंड).